om 23 Final_Page 1 and 2 02/03/2015 10:20 Page 5

डोम्बीवली-घाटकोपर। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'सखी मंच मैराथॉन' का झण्डी दिखाकर शुभारंभ करते हुए प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता अक्षय कुमार, ब्र.कु. करुणा,माउण्ट आबू, ब्र.कु. निकुंज, ब्र.कु. नलिनी, ब्र.कु. शक्कू, भाजपा नेता सुधीन्द्र कुलकर्णी तथा अन्य। मैदान में मैराथॉन में भाग लेने वाली बहनें व मातायें।

परिवर्तन से परम शक्ति की ओर...

हम में से अगर कोई लकड़हारा किसी बगीचे में जाता है तो वह वहाँ अपनी पसंद की लकड़ियों को परखेगा। ठीक इसी तरह से कोई चित्रकार उसी बगीचे में जाता है तो वह वहाँ फूलों की सुंदरता को निरखेगा। तो यह सब कुछ हम पर ही निर्भर करता है, यह हमारा शरीर, शरीर की कर्मेन्द्रियाँ वैसा ही करती हैं जैसा आदेश हमारा मन देता है। इसलिए पापी किसी जेलखाने में नहीं, किसी आतंकारी शिविर में नहीं बल्कि हमारे भीतर बैठा हुआ है, हमारा मन। जब-जब मन पुण्यकार्य मे लीन होता है तब-तब पुण्यात्मा

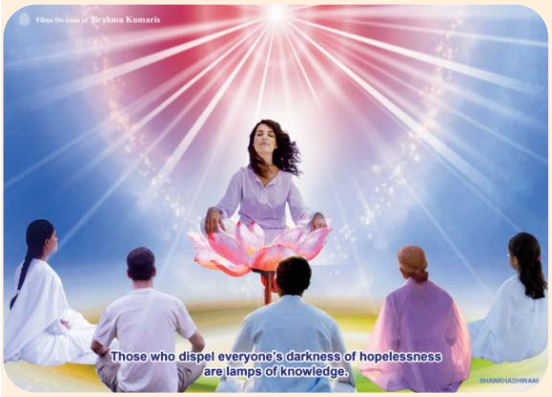

बन जाता है और जब-जब मन पाप दसामय होता है पापी हो जाता है अत: संसार में न तो कोई व्यक्ति सनातन पुण्यात्मा है और न कोई सनातन पापी। लेकिन जब-जब हम प्रेम के क्षणों में गुज़रते हैं पुण्यात्मा होते हैं और जितनी बार क्रोध में होते पापी हो जाते हैं। अत: संसार में सब एक जैसे पुण्यात्मा, सब एक जैसे पापी हैं। लेकिन जो आत्मा अपने चित्त को सुधारने के लिए, अपने मन को सुधारने के लिए सजग हो जाए, तो वही पुण्यपथ का सच्चा-सच्चा राही होता है। **वह न कोई हिन्दू, न कोई मुसलमान, न सिक्ख और न कोई ईसाइ होता है। जिसने अपने मन को पहचाना, वह यह जान जाता है कि ये सब तो ऊपर-ऊपर के लेबल हैं, रबड़ स्टाम्प मात्र हैं। आदमी तो अपने ही मन का अनुयायी होता है और जिस दिन उसे यह बात समझ आ गई, उस दिन हर इंसान इस बात के लिए सजग होगा कि मैं भी किसी धर्म का अनुयायी बनूँ। एक ऐसे धर्म का अनुयायी जो मेरा अपना स्वधर्म हो,** मेरी प्रकृति और मेरे अस्तित्व का धर्म हो, और उसमें से जो तथ्य निकल कर आयेगा वही हमें वास्तविक और सच्चा धार्मिक बनायेगा जिसका परिणाम हा-`गा, सम्पूर्ण शान्ति, सम्पूर्ण आनंद, अमृतमु-`क्त, जीवनमुक्ति अथवा निर्वाण।

जीता हुआ चित्त सदा सुखदायी होता है और हारा हुआ चित्त दु:खदायी। जीतना माना परिवर्तन, चित्त और चेतना का परिवर्तन। जैसे गाय भैंस का गोबर मिट्टी में मिलाने पर खाद बन जाती है जिसे हम गंदगी कहते हैं और इसे जब किसी बीज में डाला जाता है तो वह उसका भोजन बन जाता है, फिर वह बीज उसी में अंकुरित होकर एक सुंदर-सा पौधा और फूल बन जाता है, फलता और फूलता है, सुंदर-सुंदर कलियां इसमें अपनी जगह बनाती हैं, खिलती और खिलखिलाती हैं। खुद को भी और अपने संग में आने वालों में भी अपना रंग भरती है अर्थात् दुनिया वालों को खुशबू से भरपूर करती है। फिर एक दिन मुस्कराते हुए उसी प्रकृति की गोद में हमेशा के लिए समा जाती है। तो इस प्रकार गाय, भैंस का गोबर जिसे हमने गंदगी कहा, खुशबू में बदल गया तो ठीक इसी तरह हम भी अपने चित्त में, मन में परिवर्तन लाकर हम अपने जीवन में भरी गंदगी और किचड़े में भी खुशबू ला सकते हैं। आज जितनी भी महान आत्मायें हैं वे भी जन्म से कोई महान नहीं थे, वे भी किसी न किसी कोंख से ही इस धरती पर आये हैं। जन्म के धरातल पर तो हम सब एक जैसे हैं, फर्क पड़ जाता है जीवन के धरातल पर, जीवन की समझ और उसमें परिवर्तन पर। मेरे कहने का मतलब है यह राज़ आज का इंसान थोड़ा समझ तो ले।

आज हम जानते हैं कि मनुष्य अपना अहम लक्ष्य प्राप्त करने के लिए शिक्षा द्वारा पढ़कर डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, नेता, अभिनेता अथवा सन्यासी बनकर ही रहना चाहता है लेकिन हम जानते हैं कि इतने बड़े-बड़े पद प्राप्त करके भी ये सब जीवन में सुखी नहीं हैं। इनको भी तन का रोग, मन की अशान्ति, धन की कमी, प्रजा की चिन्ता अथवा कोई शारीरिक बीमारी होकर कोई न कोई दु:ख तो इनको भी लगा ही रहता है, अत: बड़े-बड़े पद प्राप्त करके भी पूर्ण सुखी ये भी नहीं हो पाते हैं अर्थात् जीवन के अहम लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाते। क्योंकि जीवन का अहम लक्ष्य तो है सम्पूर्ण शान्ति, सम्पूर्ण आनंद, सम्पूर्ण प्रेम अथवा सम्पूर्ण पवित्रता है अर्थात् श्रीलक्ष्मी और श्रीनारायण के पद की प्राप्ति है, जहां तक आज का इंसान नहीं पहुँच पाता है।

अत: हम अपने चित्त और मन में परिवर्तन लाकर विकार रूपी ज़हर को जीवन से बाहर निकालकर, अपनी आत्मा में स्थित अनादि संस्कार जो सुषुप्त अवस्था में पड़े हैं, जो आत्मा के स्वधर्म कहलाते हैं, उन्हें ''इमर्ज'' कर अपने जीवन को खुशियों से भर सकते हैं। तो हम ईश्वर को साक्षी रखकर इस बात की आज से ही दृढ़ता लें कि हम अपने आत्मा के स्वधर्म, सुख, शान्ति, आनंद, प्रेम, शक्ति, ज्ञान एवं पवित्रता को ''इमर्ज'' कर दुनिया में बांटेंगे तथा मन, वचन और कर्म में ऐसी दृढ़ता लायेंगे कि हम एक न एक दिन नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी बनकर ही दिखलायेंगे, बनकर ही दिखलायेंगे।

-ब्र.कु. कन्हैया, चित्तौड़गढ़, पूर्व स. महाप्रबन्धक दूरसंचार विभाग – भारत सरकार।

ज्युरिस्ट विंग द्वारा कॉन्फ्रेन्स का आयोजन

ब्रह्माकुमारीज़ के ज्युरिस्ट विंग द्वारा 29 मई से 02 जून 2015 तक ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय माउण्ट आबू के शांतिवन परिसर में ज्युरिस्ट कॉन्फ्रेन्स का आयोजन किया जा रहा है। इस कॉन्फ्रेन्स में एडवोकेट्स, जजेज़, सेल्स टैक्स, इनकम टैक्ट प्रैक्टिसनर्स/कमिश्नर्स, सी.ए., पुलिस ऑफिसर्स, लॉ कॉलेज प्रोफेसर्स तथा इससे संबंधित कोई भी भाई बहन भाग ले सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :- ब्र.कु. लता आर. अग्रवाल
मो.- 9414154670

वारंगल। तेलंगाना के नवनिर्वाचित डिप्युटी चीफ मिनिस्टर कादियम श्री हरी को गुलदस्ता भेंट कर बधाई देते हुए ब्र.कु. श्रीलता, ब्र.कु. सुधाकर तथा ब्र.कु. वसन्ता।

राजपुर-म.प्र.। ब्र.कु. सूर्य के राजपुर आगमन पर पुष्प गुच्छ भेंट कर सम्मानित करते हुए पूर्व स्वास्थ्य मंत्री एवं क्षेत्रीय विधायक बाला बच्चन जी। साथ हैं ब्र.कु. प्रमिला।

रीवा-म.प्र.। 'व्यसन मुक्ति हेतु प्रबुद्ध वर्ग की भूमिका' विषयक कार्यक्रम में मंचासीन हैं कलेक्टर राहुल जैन, नगर निगम आयुक्त शैलेन्द्र शुक्ल, ब्र.कु. निर्मला तथा अन्य।

भरतपुर-राज.। विश्वशांति भवन सभागार में आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं राव राजा रघुराज सिंह, नवनिर्वाचित मेयर शिवा सिंह मौर, ब्र.कु. पूनम तथा ओम प्रकाश शर्मा,पूर्व प्राचार्य,आर.डी. गर्ल्स कॉलेज।